North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

IRJIF IMPACT FACTOR:6.019

ISSN: 2454-2326 Vol. 6, Issue-5 May-2020

Index Copernicus Value: 58.12 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

शैक्षिक परिपेक्ष्य में आध्यात्मिक बुद्धि

दीपक कुमार चौबे
पी. एच. डी. शोधार्थी ;शिक्षाशास्त्रद्ध
डॉ. सी. पी. रामन विश्वविद्यालय,
विलासपुर, छत्तीसगढ़

सारांश – शिक्षा एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रकिया है जो अनेक कारकों से प्रभावित होती है। इन कारकों में आध्यात्मिक बुद्धि भी एक कारक है। सामान्यत देखने में आया है कि जिन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है उन व्यक्तियों का आध्यात्मिक विकास कम होता है तथा जिन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि अधिक होती है उन व्यक्तियों का आध्यात्मिक विकास अधिक होता है। अतः शैक्षिक विकास हेतु आध्यात्मिक बुद्धि का विकास किया जाना चाहिए।

शोध कुंजी – आध्यात्मिक बुद्धि, शैक्षिक विकास।

प्राचीन काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक विकास को माना जाता था लेकिन जैसे जैसे समय बदलता गया वैसै वैसे शिक्षा का उद्देश्य भी बदलता गया तथा शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक विकास के स्थान पर भौतिक विकास हो गया। परन्तु आज भी व्यक्तियों का आध्यात्मिक विकास किसी न किसी रूप में शिक्षा का उद्देश्य बना हुआ है तथा किसी न किसी रूप में व्यक्तियों के सम्पूर्ण विकास को प्रभावित करता है।

कुछ विद्वानों का तो यहॉ तक माना है कि व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास ही है। व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास उसके व्यवहार, विचार, सोच समझ, वातावरण बुद्वि आदि पर निर्भर करता है और खास रूप से व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्वि पर निर्भर करता है। प्राचीन काल से मानव की इच्छा प्रसन्न एवं स्वस्थ जीवन व्यतीत करने की रही है किन्तु वर्तमान समाज का स्वरूप मनुष्य जीवन के व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों पक्षों को प्रभावित करता रहा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लगातार दबाव में वृद्धि होती जा रही है। वर्तमान समय में मानव विकास, आधुनिक तकनीक पर निर्भर होता जा रहा है जिसके कारण व्यक्ति पर भावात्मक, मानसिक एवं शारीरिक दबाव बढ़ता ही जा रहा है। समाज का प्रत्येक वर्ग आज मानसिक दबाव व तनाव का शिकार है। युवा वर्ग को आज अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण उनमें मानसिक अशांति, क्रोध, तनाव, चिन्तन, एकांकीपन आदि अनेक समस्याओं का जन्म होता है। इन बढ़ती हुई समस्याओं के समाधान में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता सहायक हो सकती है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति के जीवन को तनाव रहित व मस्तिष्क को स्वस्थ रखने में सहायक है। विवेकानन्द के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के लिये केवल एक ही मार्ग है और वह है–आत्मा की एकाग्रता। जीवन में प्रयुक्त संवेगात्मक बुद्धि लब्धि की उपस्थिति ही व्यक्ति को मशीनी उपकरणों और पशुओं से श्रेष्ठ सिद्ध करती है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति में सहृदयता और सृजनात्मक से आत्म चेतना और आत्म प्रतिष्ठा से तथा लचीलेपन से होता है। इस प्रकार शिक्षा और मनोविज्ञान में मानसिक शक्तियों और उनके मापन की अवधारणा कोई नई बात नहीं है, लेकिन आध्यात्मिक बुद्धि को शिक्षा जगत के लिये नवीन सम्प्रत्यय माना जा सकता है। पिछली शताब्दी की अवधि में बुद्धिमत्ता विशाल परिवर्तन से गुजरी है। इनके द्वारा प्राचीन बुद्धि लब्धि के सत्प्रत्यय में बदलाव किया गया है। वर्तमान में मनोवैज्ञानिक व्यवहार में म्ण्फ तथा ैण्फण का उल्लेख भावात्मक बुद्धि एवं आध्यात्मिक बुद्धि को क्रमशः पहचानने तथा समन्वित मनोवैज्ञानिक सामाजिक व

आध्यात्मिक व्याख्या करने में गर्व का अनुभव करते है। वर्तमान भावात्मक बुद्धि व्यक्ति की प्रभावी अनुकूलन क्षमता है व्यक्ति के मधुर सामाजिक समयोजन के लिए, आध्यात्मिक बुद्धि का अस्तित्व, समस्याओं को उसके अर्थ मूल्यं एवं अन्तिम मौलिक विचार के साथ पहचानने व उसका समाधान करने हेतु जाना जाता है। आध्यात्मिक बुद्धि को अधिक समझाने के लिए विद्वानों ने आध्यात्मिक बुद्धि को निम्नवत् रूप में व्यक्त किया है–

रोहिल के अनुसार –

''आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता वह है जिसमें हम अपने अर्न्तज्ञान के बारे में जान सकते है तथा इसमें अपनी विभिन्न योग्यताओं को उजागर करने की योग्यता है।''

गार्डनर के अनुसार –

''तर्क करने के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एक सर्वश्रेष्ठ अस्तित्व बुद्धि है।''

लैगोस्को के अनुसार –

''आध्यात्मिक बुद्धि हमारी तर्कसंगत अवधारणाएँ बनाने की योग्यता है, यह दूसरों को समझने की योग्यता का प्रतिनिधित्व करती है और भावनात्मक बुद्धि हमारी अपनी श्रेष्ठ भावनाओं और दूसरों को प्रभावित करने की हमारी क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है।''

शर्मा एवं शर्मा के अनुसार –

''आध्यात्मिक बुद्धि, आध्यात्मिक विकास का आधार है जो व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास को प्रभावित करती है।''

सिहं, पी. के अनुसार –

''आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति की अन्तरात्मा की आवाज है।''

आध्यात्मिक बुद्धि एक ऐसी मनोविज्ञानिक अवधारणा है जो व्यक्ति को परांहम् की ओर ले जाती है तथा व्यक्ति का उच्चतम आध्यात्मिक विकास कराती है। जोहारटल ने इसके बारे में कहा है कि आध्यात्मिक बुद्धि की उपस्थिति में परम बुद्धि एवं दोनों के प्रभावी संचालन के लिये आवश्यक आधार प्रदान करता है तथा आध्यात्मिक बुद्धि हमारे मन शरीर, भावना आदि का सबसे अच्छा उपयोग सहज तार्किक ज्ञान के उपयोग के द्वारा किसी भी स्थिति के लिए प्रतिक्रिया करने की क्षमता है। आध्यात्मिक बुद्धि के बारे में लोविन ने कहा है कि आध्यात्मिक बुद्धि ज्ञान का ऐसा भाग जो हमें किसी कार्य को करने या समझने या करने का नया तरीका प्रदान करता है। जैबर ने आध्यात्मिक बुद्धि के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि हमारे आध्यात्मिकता हमारे खुद की गहराई में है। जो अनन्त वास्तविकता की जड़ में निहित है। इस स्थिति को भौतिक वैज्ञानिकों ने क्वांटम व्यक्यूम कहा है। धार्मिक लोगों द्वारा आध्यात्मिक बुद्धि की ईश्वर की संज्ञा दी गयी है। आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति की ऐसी संज्ञानात्मक क्षमता है। जिसके आधार पर व्यक्ति इस सम्पूण संसार की वास्तविकता को जान लेता है।

आध्यात्मिक बुद्धि, मानव मस्तिष्क, मन तथा आत्मा की आन्तरिक तथा अन्तरंग योग्यता तथा क्षमता है। आध्यात्मिक बुद्धि वह बुद्धि है, जो हम क्या है, क्यों हैं, जीवन का क्या लक्ष्य हैं, तथा उसके क्या आदर्श और मूल्य हैं, आदि प्रश्नों के उत्तर ढूँढने में कार्यरत रहती है। आध्यात्मिक बुद्धि वह बुद्धि है जो हमारी संज्ञानात्मक तथा संवेगात्मक बुद्धि को उचित प्रकार की दशा एवं दिशा प्रदान कर उनका सर्वोत्तम उपयोग करने में हमारी मद्द करती है ताकि हम अपनी प्रतिभाओं के द्वारा अपने तथा दूसरों के जीवन को खुशहाल बनाये रखने में सफल हो सकें। आध्यात्मिक बुद्धि सार्वभौमिक होती है। यह दुनिया के किसी भी कोने में किसी भी जाति, वर्ग, धर्म या लिंग के व्यक्तियों में पायी जाती है जो लोग अपने लिए तथा दूसरो के लिए जीते हैं। सज्जन, सहृदयी व्यक्तियों में यह बहुतायत मिलती है। आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्तियों द्वारा दूसरे व्यक्तियों को समझने के लिए

किसी व्यक्ति की क्षमता को बढ़ाती है। आध्यात्मिक समझ एक व्यक्ति को व्यवहार के असली कारणों को जानने तथा दूसरों की सेवा के लिए व्यक्ति को अनुमति देती है। इस क्षमता का विकास स्वयं की सीखने की प्रथम स्वतंत्रता, आवश्यकता रहित लगाव एवं अपने आन्तरिक अस्तित्व से मिलने की आवश्यकता है। आध्यात्मिक बुद्धि जन्मजात आन्तरिक आध्यात्मिक गुणों, पारदर्शी सोच, कार्यो एवं अभिवृत्ति को प्रकट करने की क्रिया है। आध्यात्मिक होने के लिए आवश्यक है सोचना, करना और आपस में सम्बन्धित रहना। हमारी सोच स्वयं के बारे में आत्मा नहीं, शरीर के रूप में स्वयं के बारे में जागरूकता से बात करने हेतु हममें से अधिकांश अपने भौतिक रूपों पर विश्वास करते हैं इसलिए हम हमारे शरीर और उस नाम के साथ जाने जाते है, जो हमने हमारे शरीर को दिया है। जैसे हमारी राष्ट्रीयता, जाति, लिंग, पेशा आदि। आध्यात्मिक दृष्टि से यह भावनाएँ हमेशा अहंकार का परिणाम होती है जो आपकी सच्ची आध्यात्मिक प्रकृति जो कि शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्वक व आनन्दपूर्ण है अवरूद्ध करती है। आध्यात्मिक बुद्धि विभिन्न कारकों जैसे विनम्रता, करूणा, व्यापक दृष्टिकोण, नेतृत्व आदि का प्रदर्शन करते हुए दुनिया के मुद्दों को हल करने एवं उन पर नियंत्रण स्थापित करने का अधिकार देती है। शिक्षा के क्षेत्र में बौद्धिक विकास पर अधिक जोर दिया जाता है लेकिन आध्यात्मिक बुद्धि समुचित विश्लेषण और विकास के साथ ही बौद्धिक विकास कर सकती हैं। यर्थाथ रूप में आध्यात्मिक बुद्धि किसी दिए गए क्षेत्र में आध्यात्मिक समझ करने के लिए एक संज्ञानात्मक क्षमता से अधिक है। सामान्य रूप से यह किसी हद तक आध्यात्म को समझने की शक्ति हेतु निश्चित क्षमता है। वैसे यह व्यापक क्षमता निश्चित मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को घटा नहीं सकती है, हालांकि कुछ आध्यात्मिक प्रथाओं एवं क्षमताओं को अनन्य मनोवैज्ञानिक गतिविधियों के द्वारा प्रकट किया जा सकता है। आध्यात्मिक बुद्धि, मानवीय क्षमताओं में जाँच की एक व्यापक समझ के रूप में है। यह एक तीव्र जिज्ञासा के दृष्टिकोण पर आधारित, आध्यात्मिक बुद्धि को एक केन्द्रियहित क्षमता, भगवान के माध्यम से दुनिया एवं अपने को समझने के लिए

एवं तदनुसार जीवन के अनुकूलन के रूप में माना जाता है। आध्यात्मिक बुद्धि एक बुनियादी योग्यता है जो अन्य सभी योग्यताओं के आकार और निर्देशन की क्षमता है। आध्यात्मिक लेखक एवं विशेषज्ञ लोग उसे जानने के लिए अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर निर्भर है तथा आध्यात्मिक बुद्धि की अनेक विशेषताओं का वर्णन करते हैं जैसे–आस्था, विनम्रता, कृतज्ञता, एकीकृत करने की क्षमता, भावनाओं सदाचार एवं नैतिक आचरण को नियंत्रित रखने की क्षमता, क्षमा व प्रेम के लिए क्षमता, सबको सम्मलित करने वाले चित्रित वर्णन की क्षमता आदि। आध्यात्मिक बुद्धि हमारे परिश्रम के वास्तविक अर्थ को समझने, हमारे अपने प्रेरणा स्त्रोतों को जानने की हमारी योग्यता का प्रतिनिधित्व करती है। आध्यात्मिक बुद्धि हमें उन लोगों के बुनियादी प्रेरक जानने में भी मदद करती है जिनके साथ हम कार्य कर रहे है। आध्यात्मिक बुद्धि वह बुद्धि है जिसके साथ हम हमारे गहरे अर्थ, मूल्यों, उद्देश्यों और उच्चतम की मंशा एक पहुँच सकते हैं। आध्यात्मिक बुद्धि विवेक एवं करूणा के साथ व्यवहार करते समय स्थिति की परवाह किए बिना भीतरी और बाहरी शांति बनाए रखने की क्षमता है।

आध्यात्मिक बुद्धि द्वारा व्यक्ति विपरित परिस्थितियों में अपने आपको समायोजित कर लेता है अर्थात् जब व्यक्ति के सामने विपरित परिस्थितियों आती है तो व्यक्ति अपने आध्यात्मिक बुद्धि द्वारा परिस्थितियो को समझता है तथा आध्यत्मिक बुद्धि द्वारा इन परिस्थितियों में न्याय संगत निर्णय लेता है। सामान्यः देखने में आता है जिन व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि अधिक होती है वे सामाजिक मूल्यों को आसानी से आत्मसात् से कर लेते है और जिन व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है वे सामाजिक मूल्यों को आसानी से आत्मसात् नहीं कर पाते हैं। सामाजिक संस्कृति एवं सभ्यता का विकास एवं हस्तानान्तरण, वे व्यक्ति आसानी के कर पाते है जिनमें आध्यात्मिक बुद्धि अधिक होती है, जिन व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है वे समाज की सस्कृति एवं सभ्यता के विकास तथा हस्तानान्तरण में कम ही सहयोग दे पाते हैं। आध्यात्मिक बुद्धि द्वारा व्यक्ति

को संसार की वास्तविकता को समझने में सहायता मिलती है। जिन व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि उच्च होती है वे संसार की वास्तविकता को आसानी से समझ लेते है तथा जिन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है वे संसार की वास्तविकता को समझ नहीं पाते हैं। आध्यात्मिक बुद्धि, व्यक्तियों के व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। जिन व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि अधिक होती है उनके व्यक्तित्व में स्थायित्व अधिक होता है तथा जिन व्यक्तियों में अध्यात्मिक बुद्धि कम होती है उनके व्यक्तित्व में स्थायित्व कम होता हैं। व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है। व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि, व्यक्ति के स्वास्थ्य से प्रभावित होती है। जिन व्यक्तियों अधिक होती है तथा जिन व्यक्तियों का स्वास्थ्य सही नहीं होता है उन व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है। घर का वातावरण व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि को प्रभावित करता है। जिन व्यक्तियों के घर का वातावरण सही होता है उनमें आध्यात्मिक बुद्धि अधिक तथा जिन व्यक्तियों के घर का वातावरण सही नहीं होता है उन व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है। आध्यात्मिक बुद्धि सामाजिक वातावरण से प्रभावित होती है। सामान्यतः सभ्य समाज के व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि अधिक तथा असभ्य समाज के व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है। दुर्घटनाएं व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि को प्रभावित करती है। जिन व्यक्तियों के साथ दुर्घटनाए अधिक घटती है उनमें आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है। शिक्षा, व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि को प्रभावित करती है, जिन व्यक्तियों को उचित शिक्षा मिलती है उनकी आध्यात्मिक बुद्धि अधिक तथा जिन व्यक्तियों को उचित शिक्षा नहीं मिलती है उनकी आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है। अनुभव एवं परिपक्वता, व्यक्ति की आध्यात्मिक बुद्धि को प्रभावित करती है। सामान्यतः व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि, व्यक्तियों के अनुभव और उनकी परिपक्वता के साथ-साथ बढ़ती है।

आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्तियों को सोचने समझने विचार विमर्श करने, चिन्तन करने, समायोजन करने, निर्णय करने, आदि को करने की योग्यता का विकास करने में

सहायता करती है जबकि ये कार्य शिक्षा द्वारा भी किये जाते है। इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्तियों में शिक्षा विकास हेतु आधार प्रदान करती है। सामान्यतः यह देखने में आया है कि जिन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि अधिक होती है उन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि अधिक होती है दूसरी ओर जिन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है उन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि भी कम होती हैं। जिन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि अधिक होती है उन व्यक्तियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है तथा जिन व्यक्तियों की आध्यात्मिक बुद्धि कम होती है उन व्यक्तियों की शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृत कम होती है। अतः व्यक्तियों के शैक्षिक विकास के लिए उनमें आध्यात्मिक बुद्धि का भी विकास भी आवश्यक है। अतः व्यक्तियों के शैक्षिक विकास हेतु व्यक्तियों में आध्यात्मिक बुद्धि को विकसित करने के प्रयास किये जाने चाहिए जिसके लिए व्यक्तियों का स्वास्थ्य को उन्नत करना, घर के वातावरण को स्वस्थ एवं विचारशील बनाना, सामाजिक वातावरण को उन्नत करना, दुर्घटनाओं से व्यक्तियों को बचाना, उचित शिक्षा की व्यवस्था करना, विद्यालयों में विद्यार्थियों के साथ सहानुभूति रखना तथा व्यक्तियों में तर्क, आलोचना, विचार विमर्श आदि को बढ़ावा देना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1 कुप्पूस्वामी, बी० (१९७६) बाल व्यवहार और विकास, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा०लि०।

2 गुप्ता, ए० (१९८२) स्ट्रेस एमंग वर्किंग, इट्स इफेक्ट्स ऑन मैरिटल एडजमेंट, पेपर प्रेजेन्टेड एट दि० यू० जी० सी० सेमिनार ऑन स्ट्रेंस इन कॉन्टेम्प्रेरी लाइफ, नई दिल्ली : स्ट्रेटजी ऑफ कोपिंग।

3 भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जूलाई-दिसम्बर, २००६

4 यादव, अनिल (२०१०), एम०फिल डेजर्टेशन, आईएएसई विश्वविद्यालय गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर।

5 सिंह, सतीश कुमार (२०१७), बाल्यावस्था एवं उसका विकास, नई दिल्ली, ए०पी०एच० पब्लिकेशन्स।

6 तिवारी, प्रदीप कुमार एवं डा० सिंह सतीश कुमार (२०१७), इन्टरनैशनल जनरल ऑफ एडवांस रिसर्च एण्ड डबलपमेंट

7 श्रीवास, सन्दीप कुमार एवं डा० कुमार अरूण (२०१६), इन्डियन स्ट्रीमंस् रिसर्च जनरलस्

8 लाल, आर०बी० ;२००६द्धए भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं, मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन्स।

9 सिंह, ए०के० ;१९९८द्धए शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भरती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।